शबरी
डॉ. अमरेन्द्र

शबरी

(अंगिका खण्ड काव्य)

शबरी

(अंगिका खण्ड काव्य)

कवि

डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक

सफाली समग्र अंगिका विकास संस्थान

सराय, भागलपुर-८१०००२ (बिहार)

© Dr. Amrendra

पुस्तक : शबरी (अंगिका खण्ड काव्य)
कवि : डॉ. अमरेन्द्र
संस्करण : २०१४ ई.
मूल्य : बीस टका
प्रकाशक : स. स. अं. वि. सं., भागलपुर-२
ISBN : 978-81-927828-6-7
मुद्रक : सत्यम् कम्पोजर्स, पटना-16

पुस्तक मिलने के पता

■ अंगिका संसद, लाल खां दरगाह लेन, सराय, भागलपुर-८१२००२ (बिहार)

SHABRI (Poem)
By Dr. Amrendra

अंगिका मंगला
चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र
केरॉ स्मृति में

—अमरेन्द्र

पुरोवाक्

डेढ़ दू साल होतें होतै, शबरी पर काव्य लिखै के मोंन हठासिये बनलै । ई बात हम्में अंगिका रामायाण के महाकवि विजेता मुद्गलपुरी कें बतैलियै, तें हुनी कुछ नया जानकारी देलकै । हुनकै सें हम्में जानै पारलियै कि शबरी सें रावण मिललोंॅ छेलै, जेकरोंॅ उल्लेख आचार्य चतुर सेनें 'वयं रक्षामः' में करलें छै ।

भला रावण कथी लें मिललोंॅ होथै । सोचतें-सोचतें कुछ उत्तर मिलतै, तें ओकरा ई काव्य में राखी देलियै । वही समय, यहू मनोंॅ में उठलोंॅ छेलै, कि राम के दर्शनो बाद शबरी के देह-त्याग के कथा ज्यादा तर्कपूर्ण नै लागै छै । मन में ई पहिलोंॅ दाफी यहा शंका उठलै कि देहत्याग के पीछू कहीं आरो कारण तें नै छेलै ? ई प्रश्न शबरी पर कुछ लिखै के साथे उठलोंॅ छेलै, आरो यही प्रश्न हमरा शबरी पर बहुत कुछ जानै लें, पढ़ै लें विवश करलकै, आरो आखिर में जाय कें फादर कामिल बुल्के के लिखलोंॅ रामकथा हाथ लागलै । शबरी पर लिखै लें हमरा बहुत कुछ मिली गेलोंॅ छेलै, मतर वैं देह कैन्हें आगिन कें सौंपी देलकै, एकरोंॅ उत्तर तें वहूँ नै छेलै ।

ई शबरी काव्य में यहा प्रश्न के उत्तर छै जे कोनो रामकाव्य में शायते मिलें। मिलै के तें शबरियो के कथा बहुते रामायाण में नै मिलै छै। फादर कामिल बुल्के लिखलें छै, कि आदि रामायण में भी शबरी के उल्लेख नै होतै । ई परवर्ती राम कथा के देन छेकै । शबरी चाहे पूर्व जन्मोंॅ में कोय ऋषि के पत्नी रहें आकि शबर जाति में उत्पन्न कन्या, यै सें कोय अन्तर नै

पड़ै छै । एकरोॅ उदात्त व्यक्तित्व ओकरोॅ त्याग आरो सामाजिक दृष्टि के कारण छेकै । ई बात गलत नै लागै छै कि भक्ति के महत्व प्रतिपादित करै लेली ही 'शबरी' कें एत्तें दीन आरो नीच दिखाय के प्रयास रामकाव्य में होतें रहलोॅ छै । जों ई नै होतियै, तें रामकाव्य में शबरी के चरित कुछ आरो होतियै ।

बेसी प्रचलित कथा मोताबिक शबरी आजीवन कुमारिये रही गेलै । जबें ओकरा मालूम भेलै, कि ओकरोॅ होय वाला पति बड़ी भारी शिकारी छेकै, तें ऊ भागी कें पम्पापुर के जंगल आवी गेलै । होना कें कोल जाति के कथा मोताबिक, जबें राम पम्पापुर सें प्रस्थान करें लागलै, तबें हुनी शबरी से पति चुनी लै लें कहलकै आरो शबरी हुनकोॅ बात मानी लेलें छेलै । कोल जाति अपना कें शबरिये वंशोॅ के मानै छै। जे हुएॅ हम्में ई कथा कें यहां छूलें भर छियै, ताकि ई सिद्ध हुएॅ पारें कि राम रोॅ वनवास के समय शबरी के उमिर कत्तें होतै । बेसी सें बेसी बाइस-पच्चीस के।

जे हुएॅ, हमरोॅ ई काव्य के शबरी विकास के क्रम में आयकोॅ नारी के बड्डी नगीच छै, आरो एकरोॅ यही रूप हम्में चाहै छेलियै । ई कोशिश में रामायण काल आधुनिक काल सें मिली कें एक होय गेलोॅ छै ।

हमरा आचरज छै कि जे काव्य डेढ़-दू सालोॅ में पूरा नै हुएॅ पारलै, ओकरे जबें पहलोॅ छन्द २०१३ के दसमोॅ महिना के २५ तारिख कें लिखलियै, तें ग्यारहमोॅ महीना के ठीक दीपावली के रोज ई काव्य पूरा होय गेलै । पूरे पूरी दस रोजोॅ में ।

ई पुरोवाक् लिखतें-लिखतें रात उतरें लागलोॅ छै । आरो अन्हरिया कें दूर करै लें सब दिशा में दीया जगमगावें लागलोॅ छै । शबरी लें एक दीया हमरो ।

—अमरेन्द्र

३-११-२०१३
(दीपावली)

सम्पर्क :
लाल खां दरगाह लेन, सराय,
भागलपुर, बिहार-८१२००२
मो. ०९९३९४५१३२३

सर्ग

१. अपशगुन/१०
२. आस्था/१२
३. अन्तर आलाप/२७
४. आकाशवाणी/४०
५. शेष प्रश्न/४२

शबरतनया शबरी के जिनगी रों लेखा
पत्थरों के मांग पर सिन्दूर-रेखा !

अपशगुन

हे गुरू, ऊ स्वप्न केन्हों घोर,
सच हुऐ नै पारें, करिया भोर !

सब दिशाहे घूरतें जों प्रेत,
आगिनों कें छै उड़ैतें रेत ।

सुखलों कुइयां पोखरो, घट-घाट,
छै रसातल में धसैलों पाट ।

टूटलों छै वेदी रों सब भोर,
डैनियो सें क्रूर करिया भोर ।

ब्रह्मबेला में कपसवों-शोर,
की अघट लैये कें ऐतै भोर ।

हे गुरू ई केन्हों करिया घोर,
आँख में पत्थर बनी छै लोर ।

भोर के ई वक्तिये में
के विकट सम्वाद दै छै,

साधना के ही क्षणों में
अस्त्र फेकी प्राण लै छै ?

आस्था

की सुनै छी जानकी कें
राम्है वनवास देलकै,
ई कना होतै कि पुण्यैं
स्वर्ग रों अभिशाप लेलकै!

जे कहै ई; झूठ बोलै
के करें विश्वास यै पर !
मन तें मरपा रं लगै छै
अपशगुन रों धिनक-थै पर।

राम जों नररूप में छै
तें हुनी सचमुच नरे की !
जे दिखै छै सामना में
की कहौं, ओकरों परे की!

राम तें मृत्यु-भुवन पर
देव रों अवतार छेकै,
शून्य में सजलों होलों जे
तेज रों संसार छेकै ।

जिनका लें कंचन सिंहासन
पात पीरों पतझरों के,
आरों वन में वास करवों
स्वर्ग नाँखी; सुख घरों के।

शील के, सौन्दर्य के जे
कोष छेकै शक्तियों के,
ऊ केना ई काम करतै
वास जैमें भक्तियों के ।

राम तें सब रों हितेषी
ऋषि-तपी के, शबरियों के,
काठ सें पत्थर तलक रों
नर नै खाली, नारियो के।

याद छै हमरा ऊ सब्भे
जे कुमारा में गुजरलै,
कुछ कथा हेने ही छेलै
माँग हमरों ई नैं भरलै ।

जे कथा कोय्यो नै जानै
ई भरी पम्पापुरों में,
राम कहले चललों गेलै
सब कथा एक्के सुरों में—

''हे शबरतनया, हे शबरी
के तोरों रं छै दयामय,
वध-वधिक पर रोक लेली
छोड़ी ऐलौ विभव अक्षय।

''बस जेन्हैं कें जानलौ ई
होय वाला तोरों पति जे,
छै शिकारी सौ में हेने
रोकी लै गतियो के गति जे।

'एक्के तीरों सें गिरावै
उड़तें होलें पाँच पंछी,
ई सुनी कें बोंर लेली
बोललौ, 'ऊ नर अधम; छी!'

'सब पता छै हमरा तोरों
ब्याह छोड़ी कें कथी लें,
बांधलें वैराग कें छौ,
आय तक होने जथी लें।

''हे शबरतनया, हे शबरी,
पुण्य के तों दूतिका छों,
आवै वाला देव-युग रों
आचरण के सूतिका छों।''

कान में गुंजलै सभे टा
राम के हौ मधुर बोली,
आ तखनिये चित्र दिखलै
ऐंतें मुनियो केरों टोली ।

सामना आवी ठिठकलों
देखथौं विश्वास नै छै,
राम रों अमृत वचन में
शबरी डूबै छै, बहै छै ।

देखी कें मुनि आरनी कें
राम नें हँसतें कहलकै–
''ओकरा होने मिलै छै
जे जेन्हों मन सें चहलकै।

''छों मुनि पर ज्ञात नै छौं
ज्ञान सें छै भक्ति भारी,
भक्तिये मोक्षो दिलावै
देखलौ कभियो विचारी !

''शबरी तें धरती जकाही
सब करलकौं, सब सहलकौं,
की नै कहलौ, की नै करलौ
की शबरियों कुछ कहलकौं ?

''ज्ञान ऊ पाखण्ड नाँखी
जे मनुज कें हीन समझें,
जे श्रद्धा के पात्र, ओकरौ
दीन आरो हीन समझें ।

''ज्ञानी होय के दम्भ भारी
वर्ण केरों भेद मन में,
ई तें पुर के विष छेकै जे
नै तें वनवासी, नै वन में।

''ई तोहें अच्छा नै करलौ
शबरी कें तों हीन मानी,
यै लेली निर्मल सरोवर
दूषितो छौं ओकरों पानी।

''कल खनी शबरी जेन्है कें
गोड़ रखथौं नील जल पर,
शुद्ध होंन्है कें दिखैतै;
ओस भोरे के कमल पर।

''ई बुझों कि शबरिये के
भाव सें हम्में खिंचैलों,
हिन्ने पम्पापुर छी ऐलौं
भक्ति-बान्हन सें बंधैलों।

''जों नरों में नारी लेली
मान नै सम्मान कोनो,
के कहै छै कि बसै छै
वै ठियां भगवान कोनो।''

सब पुरानों बात विस्मृत
याद ऐलै, मोंन विह्वल,
राम केरों चरण पर छै
शांत फेनू चित्त चंचल ।

लागलै शबरी कें हेने
राम ठाढ़ों सामना छै,
आरो ऊ छै हाथ जोड़ी
कुछ मनों में कामना छै ।

नील मेघे नररूपों में
राम के छै रूप हेन्हों,
या तराशी कें बनैलों
नीलमें पत्थर कें जेन्हों ।

रूप सें छिटकै प्रभा की
सूर्य के ही किरिन फूटै !
देवथौ कें जे छै दुर्लभ
आय छवि वन-प्रान्त लूटै।

दृश्य फेनू सब पहिलकों
राम वनवासी छै सम्मुख,
उपटै छै शबरी के सुख टा
भाँसले जाय भ्रान्ति रों दुख

बोललै शबरी मनेमन–
''राम तों अवतार छेकौ,
शून्य पर सजलों होलों
अपरूप के संसार छेकौ !

''मोंन नै मानै छै हमरों
हमरे गोड़ों के परस सें,
शुद्‌ध होलै ई सरोवर
जे दूषित सालो-बरस सें।

''राम, तों अपने चरण सें
शुद्‌ध करलौ छूवी जल कें,
जोड़लों हमरों कथा सें
कीर्ति-यश अपनों विमल कें।

''धूल चरणों के तोरों की ?
सृष्टि भर ई बात जानै,
शुद्‌ध हमरा सें सरोवर
बात ई नै मोंन मानै ।

''राम तोरोॅ चरित सुनथै
के यहाँ नै मुक्त होलै,
मुट्ठी में सुख-स्वर्ग लै केॅ
भार कत्तें छै; टटोलै ।

''आय सार्थक रं लगै छै
जिनगी रोॅ सन्यास के सुख,
राम तोरोॅ दर्शने तेॅ
मोक्ष संग कैलाश के सुख।

''दुख वही दिन दूर छेलै
जे दिना कि पूज्य ऋषिवर
मुनि मतंगश्री ई कहलकै—
'राम ऐथौं तोरोॅ कुटि पर।'

''बस वहा दिन सेॅ तेॅ हम्मेॅ
ई प्रतीक्षा मेॅ ही छेलां,
कुछ कहाँ हमरा पता छै
कौनेॅ की देलकै ? की लेलां।

''राम हमरोॅ द्वार पर छोॅ
देवता रोॅ स्वर्ग फीका,
आय माँटी भाल पर छै
मुक्ति केरोॅ तिलक-टीका ।

''राम, हम्में शबरतनया
भय नै हमरा कोनो कुछुओ,
दैत्य, मानव, असुर आ सुर
दायां-बायां-आगू-पिछुवो ।

''हर किसिम के संकटों लें
तीर के सब कला जानौं,
पर जरूरत ही नै पड़लै
धनुष कें लै कभियो तानौं।

''ई भयानक ठो वनों में
डोंर तें लगवे करै छै,
रातकों गुजगुज अन्हरिया
आँख राकस रों जरै छै ।

''पर हटैलें डोंर-भय कें
छी अडिग आपनों धरम पर,
राम, तोरों भक्ति पर जों
ओतनै अपनों करम पर।

''जानकी के हरण सुनलां
तें प्रभु कुछ तीर हेन्हो
छी बुतैलें, जे कहूँ नै
रावणो लुग छै नै जेन्हो ।

''सब विपद लें वाण ई तें
जे बनैलें राखलें छी,
मृत्यु केरों जे बराबर
झूठ कुछ नै भाखलें छी।

''वाण, जेकरा पावै लेली
रावणो के मोंन छेलै,
लै दशानन-भेष अपनों
यै ठियां आवी धमकलै ।

''हम्मू धोखा खाय गेलियै
दसमुँहे सचमुच छिकै की,
हार हीरै के ऊ माया
झूठ कटियो टा दिखै की !

''भेष कोय्यो कत्तों बदलें
आचरण केना बदलतै,
हावों-भावों सें तुरत्ते
भेद ओकरों तें निकलतै।

''शांति कें बिन कारणे जे
भंग चाहै छै करै लें,
ओकरा सतकर्म हाथें'
लागतै निश्चित मरै लें ।

''वाण शोभै छै नरी कें
जे दया-ममता में रत छै,
ओकरे रक्षा में बेमत
न्याय पर टिकलों जे सत् छै।

''पाप के सिर वाण बेधें
तें जरो टा पाप की छै,
जों अकारथ प्राण लै छै
पाप अतिशय वैं छै बीछै।

''जे निछी कें राखलें छी
राम तोरा वाण अर्पित,
नारी-रक्षा लें जे उद्धत
वाण ओकरै छै समर्पित ।

''जों कजैते काम आवें
तें समझवों श्रम सफल छै,
हे नरोत्तम राम, जानौं
तोरा में तें आय-कल छै।

''युगपुरुष हे राम नरपति
छौ जना बेकल सिया लें,
केकरौ नै पैलां हेनों
भ्रान्त सचमुच में प्रिया लें।

''जे सिया लें हट्टो-हट्टो
जंगलों के खाक छानै,
ऊ प्रिया सच्चे सुहागिन
स्वामी जेकरा हेनों मानै।

''राम तोरों ई चरित सें
जे किसिम पुलकित धरा छै,
कल खना सतयुग जे ऐतै
तोरे ही तें आसरा छै ।

''नारी के सम्मान लेली
जे विकल; ऊ राम छेकै,
एक पत्नीव्रत नियम पर
जे अटल; ऊ राम छेकै ।

''जे हृदय प्राणेश्वरी में
छै अटल, ऊ राम छेकै,
नारिये नाँखी हुऍ जों
आँख छलछल; राम छेकै।

''राम तोरों शील आगू
की छै कुछुवो,
राम तोरों नील आगू
की छै कुछुवो !

''ताम्रवर्णी रावणों के
भावो कारों,
मारलों मति; गोबरों पर
घी कें ढारों ।

''रावणों के रूप-शक्ति
सब वृथा छै,
ज्ञान आरो भक्तियो की
जों अथा छै !

''नारी के विश्वास-लज्जा जे हरै छै,
मुक्ति मिलतै की ? ऊ जीतें जी मरै छै।

''नारी के अपमान छेकै :— पाप फुटवों,
ओखरी में मूड़ी राखी धांय कुटवों ।

''लोर आँखी सें त्रिया के
जों गिरै छै,
आवै वाला काल केरों
कल डरै छै ।

''समय पुरथैं जे किसिम सें
काल आवै,
मत्त गज कें घेरलें जों
जाल आवै,

''प्राण फन्दा में फँसैतै
रावणों के,
सागरो जानै छै कुव्वत
जलकणों के ।

''दोख माथा पर मणि रं
जों विराजें,
पाप जेकरों ढोल नाँखी
खूब बाजें ।

''ऊ भला केना कें होतै
पुण्यकामी !
चुप भला केना कें रहतै
लोकस्वामी !

''तों सती-सम्मान लेली
ही कुपित छों,
लाज के रक्षाहै लें तें
तों उदित छों ।

''सब चुकें, पर वाण पाँचो
ई नै चुकतै,
लक्ष्य के पहिलें कहूँ ठां
ई नै रुकतै ।

''पत्थरों के भीतरो तक
जाय बैठै,
नोक घुसथैं तिलमिलावै
गिरियो ऐंठै ।

''राम, तोरे वास्थैं हम्में जोगैलें
पुण्य रों ई पाँच फल छाती लगैलें।

''धन्य होतों
पुण्य हमरों
जों फरें तें,
पाप जतना छै धरा पर
सब जरें तें !

''राम तोरों
कीर्तिये-यश
सूर्य छेकै,
नारी कें ढाढस बंधैतें
तूर्य छेकै ।

''जे हेनों बेकल प्रिया लें
देवता ऊ,
सूर्य ग्रसतै की केन्हों कें
कुटिल राहू !

''सूर्यवंशी राम तोंहें
पूर्ण सक्षम,
जे तोरों शत्रु बनै छै
ऊ नराधम ।

''इन्द्र के देलों होलों जे
धनुष धारौ
सूर्य नाँखी वाण लै कें
खल संहारौ;

''नारी हरवैया दशानन
ध्वस्त होतै,
स्वर्णलंका के किरिन के
अस्त होतै ।

''देखी रहलों छी सरंग सें
खून बरसै,
जे गिरै छै रावणों पर
मृत्यु सरसै ।

''रक्तरंजित स्वर्णलंका
जों पलाशे,
काल केरों फेंकलों जों
निठुर पाशे ।

''जे दशानन के डरों सें
के नै थरथर,
गिद्ध ओकरे पर उड़ै छै
आय ऊपर ।

''कानै छै सों-सों सियारो
एक साथें,
रावणों के मृत्यु लिखलों
तोरे हाथें ।

''जों त्रिया लें एत्तें चिन्तित
छों तपस्वी,
देवतै छेकौ धरा पर
हे यशस्वी !

''राम तोरों यश लिखावौं
तें यहीं सें,
बिना सिया कुछुवो नै सुन्दर
कुछ कहीं सें ।

अन्तर आलाप

सब पिछुलका याद ऐथैं
आँख शबरी रों मुनैलै,
पर तखनिये नी कहीं सें
कोय्यो कहतें ई सुनैलै–

''तों बहुत भोली छों शबरी
तों अभीयो होने शुद्धि,
जानें कहिया आबें खुलथौं
बन्द तोरों मन्द बुद्धि ।

''तों बुझै छौ ई कैन्हें नी
राम वनवासी नै रहलै,
नृप आबें अवध केरों
कुछ बुझों बिन बात कहलै।

''झूठ नै समझों कहूँ सें
राम रों आदेश सें ही,
जानकी-वनवास भेलै !
की कहाँ कोय्यो स्नेही ?

''कोय्यों ई टा की कहलकै
'राम रं हमरा बुझौ नै,
आन कन रहली त्रिया लें
नीति तें लै कें लुझों नै ।'

''बस यही एक बात लै कें
रामें तेजलकै सिया कें,
देखथैं रहलै अवध भर
काठ रं करलें हिया कें ।

''राम कें तें राज मिललै
जानकी अभियो वनों में,
हम्में नै जानौं कि शबरी
की-की तोरों छों मनों में ।''

बोल होलै खत्म
ज ै न ह ै ,
झनझना झन
शोर तेन्है।

सब दिशाहै
छै प्रकम्पित,
देवता के
मूल्य शापित।

आँख खुललै ई सुनी कें
थरथरी छै, देह नै छै,
प्रश्न-शंका आरो की-की
भक्तिये नै नेह में छै ।

मन डरै छै, असकरी की
जानकी डरतें नै होतै ?
बस यही नै; ढेर अशगुन
मोंन शबरी रों हसोतै ।

तंग आवी कें कहीं नै
झम्प ही दै दै कुआँ में,
आगिने कें नै वरी लै
की दिखैतें कुछ धुआँ में।

छाती पर रक्खी हथेली
बोली पड़लै मोंन, शबरी,
''राम, हम्में जे सुनै छी
ई कठिन छै; जाँव उबरी!

'आय सचमुच जानलौं ई
नारी लें कोय्यो यहाँ नै,
घर सें बाहर तक प्रताड़ित
तीनो लोकों में; कहाँ नै!

''घोंर सें भागी कें ऐलां
बस यही लें; बाबू कट्ठर,
भाय कट्ठर, पितियो होने
होय वाला साँय कट्ठर ।

''बेटी छेलियै, चलतियै की
भागी कें ऐलौं वनों में,
झम्प दै दौ, आगिने लौं
की नै उठलै ई मनों में ।

''जे घरे नै घोंर बनलै
एक तिरिया लें कहूँ सें,
तें वने के की भरोसों
डोंर बढ़िये कें वहू सें ।

''हाय हमरों दुख सें कुछुवो
कम तें नै छै जानकी के,
सब त्रिया के भाग एक्के
के कहाँ खुश छै, सुखी के?

''लोर आँखी के बहैतें
काटै छै अपनों उमिर कें,
घोंर बन्दीगृह लगें तें
घोंर केना कहतै घर कें ?

''हमरे साथें की नै होलै
वाक् सें छलनी होलों छी,
बस यही लें कि त्रिया नी
जों गुणे सें ही धोलों छी।

''त्याग-सेवा सब त्रिया लें
नारिये सबके सुखों लें,
लागै छै ई सृष्टि भर में
जनमली छै सब दुखों लें।

''लोक के लज्जा बचैतै
तें यहू ठो नारिये ही,
घोंर के रस्मो निभैतै
तें यहू ठो नारिये ही!

''रावणें जों भय दिखैतै
तें वहूं भी नारिये कें,
आरो पति वनवास देतै
तें वहूं भी नारिये कें ।

''लाक्षणो जों पुरुष केरों
लागतै तें नारिये पर,
की बतैयौं राम तोरा
नारी-जीवन गारिये पर ।

''याद होथौं राम जखनी
हाथ जोड़ी कें कहलियौं—
नारी हम्में हीन कुल सें
ऐलों छी; दूरे रहलियौं ।

''तें तोंही नी कहलें छेलौ—
'भक्ति सें कोय्यो नै ऊँच्चों,
ऊ रहें पुंसत्व आकि
आ फेनू नारीत्व छुच्छों ।'

''जानकी तें त्याग-भक्ति
के सरोवर-सिन्धु छेकै,
की होलै जे कोय्यो भरमी
लांक्षणा रों धूल फेंकै ?

''की कही जग कें बतैवौ
प्रश्न कोय्यो काल करतौं,
कोंन ऊ उपदेश देभौ
कष्ट केना कें उबरतौं ?

''मानलौं की जानकी में
कोय कहूँ पर दोष होतै,
पर यही लें दण्ड हेनों ?
नृप में ई रोष होतै ?

''हे नरोत्तम, याद होथौं
मौन ऊ गोदावरी के;
प्रश्न तोरों प्रश्न रहलै
दोख छेलै बाबरी के ।

''बस यही लें शाप देलौ—
'तोरों जल में जे नहैतै,
अपनों गुण-क्षय के ही साथें
ऊ तुरत चण्डाल होतै ।

''शाप सें जों मुक्ति होलै
देवथै रों याचना पर,
नारी रों आँसू कभी की
काम ऐलों छै नरेश्वर ?

''आय तक हमरों कुआँ में
लोर छै गोदावरी के,
आय तक नै भूललों छी
बोल तोरों आखरी के—

'हे शबरतनया, हे शबरी
सचमुचे के तोरों नाँखी,
जे जियै छै साधना लें
मान आ सम्मान राखी ।

'के यहाँ पर तोरों नाँखी
जे कहीं कुछ ठहरें पारें,
तोरों गुण-आभा रों सम्मुख
मान कें अपनों संभारें!

'तहियो जैतें-जैतें हम्में
ई कहै छी, जों जँचौ तें,
नाँकियों नै, कोय युवक जों
ब्याह तोरा सें रचौं तें ।

'छों किशोरी, ई वयस की
सचमुचे बैराग ले ली,
छौं प्रतीक्षा में तोरे लें
एक अलसित सुधि पहेली।

'बाँह थामी कें पुरुष के
ई प्रकृति तक रूप पावै,
योगमय छै, जे जहाँ पर
मृत्यु में भी खिलखिलावै।'

''राम तोरों ऊ वचन सें
एक दाफी तें मनों में
कुछ हेने ही भाव उठलै
चैत जों बसलों तनों में।

''कूकतें जों रहें मन में
सौ-पचासौ साथ कोयल,
बौर के खुशगन्ध मादक
लाल, उजरों, नील उत्पल।

''पर तोरों प्रस्थान साथैं
भावो टा सब्भे विलैलै,
एक क्षण में लहर चंचल
धार में जाय कें समैलै ।

''आय लागै छै कि हमरा
जों अकेली छी तें अच्छे,
क्रीतदासी तें नै केकरो
यातना सें छै तें रक्छे ।

''सूर्यवंशी राम बोलों
नारिये पर सब बली की,
देवता अवतार सें लै
दुष्ट रावण रं छली की ?

''जों सही ई बात छेकै
एक ज्योतिष के बतैलों,
पूर्व जन्मों के ही एक टा
भूल लें ई जन्म पैलों ।

''जोंन ऋषि के वामा छेलां
खूब हमरा प्रेम छेलै,
रात-दिन अनुरागनीये
योग जप सें नेम छेलै ।

पर जरा-सा चूक होथैं
क्रोध ऋषि के आग नाँखि,
शाप देलखिन, जे अभी छी
ताख पर पतिधर्म राखी।

''ऊ जनम सें ई जनम तक
कोय सुख के नाम नै छै,
सच कहै छी, नारी केरों
त्याग-तप रों दाम नै छै ।

''ई जनम रों त्याग-सेवा—
शाप सें बस मुक्ति लेली,
पुरुष कें सौ भाग्य मिललै
नारी कें तिनका-अधेली !

''अतनौ पर तें मोंन हमरों
मानै लें तैयार नै छै,
जे अवध केरों बतैलें
वै में कोनो सार नै छै ।

''ई केना विश्वास करवै
राम ई आदेश करभौ,
जानकी कें राज बदला
योगिनी के भेष देभौ !

''मन नै मानै छै केन्हों कें
पर वने की झूठ बोलै ?
फूल कुम्हलैलों कैन्है छै;
पंछियो नै चोच खोलै ।

''हवा इस्थिर साँस रोकी
दिन कैन्हैं करिया लगै छै,
आय पम्पापुर में कैन्हें
मोंन उसकरिया लगै छै ।

''जों गुरूवर आय होतियै
प्रश्न बेकल करतियै की,
ई किसिम के दुख-व्यथा सें
जीते जी ही मरतियै की।

''आय तें हुनियो नै सम्मुख
ढाढ़सो कौनें बंधौतै,
प्रश्न जे हमरों मनों में
आय उत्तर, के छै, देतै ?

''जानकी-वनवास सुनी कें
मोंन हहरै, प्राण कपसै,
आगू-आगू हम्में छी तें
पीछू-पीछू मृत्यु हफसै ।

''कल तलक तें
बोंल मन कें,
आय पालां
घेरै तन कें ।

''रूप ई सन्यासिनी के
व्यर्थ लागै,
श्वेत दगदग वसन आबें
नै सुहावै !

''श्याम चर्मो हिरण केरों
भार भेलै,
फूलमाला देह परकों
खार भेलै ।

''वेदी प्रत्यक्, वेदी बलि के
छै बुझावै,
आय कोनो किंछा हमरा
नै लुभावै ।

''राम तोंही ई बतावोॅ
जे दशानन,
लांक्षणा जौनें लगावें
ऊ पतित जन,
की पुरुष रोॅ पाप सब्भे
जारिये लें ?
की धरा पर नारी जिनगी
गारिये लें ?

''नारी-सत्ता जो कलंकित
हेन्है होतै,
राजरानी जानकी जों
वन में रोतै;
निश्चिते कुल-शील-शशि पर
कुछ दिखैतै,
नीति के अन्यास अद्भुत !
के बतैतै ?

''आ अवध के लोग भी तें
मौन होतै,
मतलबे की ! खाली सब के
रौन होतै ।

''पुरवधू की ऐली होती ?
बन्दिनी जे !

सब सहै लेॅ मौन होलेॅ ;
नन्दिनी जे !

''पुछतियै के, जानकी रोॅ
दोष कैठां छै, कहौ,
दोष पुरुषोॅ के मढ़ै छै
नारी पेॅ के ? चुप रहौ ।

''सब सभासद शान्त होतै,
कुछ विवेकी भ्रान्त होतै ।

नृप के सम्मुख के बोलेॅ,
मोॅन केकरोॅ के टटोलेॅ !

राम रोॅ आदेश काफी,
आरो केकरो द्वेष काफी ।

जानकी सब कुछ सहै लेॅ,
दुख-व्यथा सब केॅ तहैलेॅ ।

जंगलोॅ में जाय बसलै,
ई धरा कैन्हें नी घसलै ।

राखी लेतियै नन्दिनी केॅ,
युग-युगोॅ सेॅ बन्दिनी केॅ ।

''राम आवी केॅ कहोॅ कि
झूठ छेकै, जे टा सुनलौं,
मोती-माणिक चुनौतियौ की
रेत परकोॅ रेत चुनलौं ।'

''राम आवी कें कहों कि
ई कथा अफवाह छेकै,
सूर्य कें झाँपै के कोनो
दुष्ट केरों चाह छेकै ।

''राम आवी कें कहों कि
शील पुरुषों के यही में,
नारी के जे मान जोगै
नर वही छै नर सही में ।

''राम आवी कें कहों कि
सुनलियै, जे भेद मति के,
खेल मायावी छेकै ई
भेष धारी कें जे यति के ।''

ई कही चुप मौन भेलै
उत्तरों के जों प्रतीक्षा,
आकि शबरी के ही लागै
आय छै कोनो परीक्षा ।

आकाशवाणी

कि तखनिये गूंजी उठलै
पूरे पम्पापुर-मतंगवन,
सातो सुर के एक लय में
गूंजी पड़लै झन-झनन-झन।

सब दिशा सें एक बोली
''मत पुकारों, कोय नै ऐथौं,
हे शबरबाला सुनी लें
चाहवों सब व्यर्थ जैथौं ।

''जे बुझै छौ नी, गलत छै
ई सही छेकै, ई जानों,
सच कहीं की झूठ होलों
तों भला कत्तो नै मानों ।

''राम रों आदेश छेलै
जे प्रजापति लोक केरों,
तोरों शंका, भ्रम, व्यथा ई
व्यर्थ सब छौं; मोंन फेरों ।

''कुछ तें हेनों बात होतै
ई निठुर निर्णय लियै में,
जे रहस बस राम जानै
बाकी तें संशय जियै में ।''

बोल भेलै बन्द औचक
पर गुंजैवों बन्द नै छै,
सौन-भादो के दिनों में
धूल रों अन्धड़ चलै छै ।

शबरीं देखलकै दिशा दिश
कोय्यो नै छेलै वहाँ पर,
लोंत-गाछों-जंगलो-गिरि
काठ सब्भे जे जहाँ पर ।

फूल उजरों, नील, पीरों
सब जरी कें खाक लागै,
ई हठासी की भेलै कि
नीचें सबरों थाक लागै ।

सामने केरों सरोवर
छै जमी कें पत्थरे रं,
लागै छै कुटियो ठो होन्हे
भूत-प्रेतों के घरे रं ।

शेष प्रश्न

शबरियो के आंग भेलै नील,
ठण्ड में ठिठुरी कें जेन्हों झील ।

प्राण सें खाली रहें जों देह,
आँख के कोरी में जमलों मेह ।

कण्ठ सें फूटै नै कोनो बात,
जों कुसुम पर शिशिर केरों घात।

विण्डवो के छै सरंग पर नाँच,
हरहरलें टूटी पड़लै गाछ ।

कोनो हलचल नै कहूँ, सब शान्त,
नै लगै छै साध्वी शबरी-प्रान्त ।

छै हवा के साँसो तक भी बन्द,
लय नै केकरो में कहूँ, कुछ छन्द।

एक सन्नाटा उठैलै बाँह,
मृत्यु केरों बहुत शीतल छाँह ।

वेदी पर शबरी रखी कें शीश,
एक दाफी सुमरी अपनों ईश;

मुनि मतंगो कें करी कें ध्यान,
रोकी लेलकै प्राण केरों गान ।

डार सें उड़ले जेन्है कें काग,
देह में तेन्है सुलगलै आग ।

नै धुआँ, नै गन्ध खाली तेज,
अग्नि कुण्डों रों सजैलों सेज ।

साध्वी शबरी रों बस अवशेष,
देखथैं बस देखथैं सब शेष ।

पर अभी भी प्रश्न गूंजै एक,
शबरी केरों प्राण में जों खेंक ।

''राम बोलो, की सिया के दोष ?
नारिये पर बस सभै के रोष ?

''जों यहा रं रहथौं यै ठां राज,
घूरतै चिरई कें हेन्हैं बाज ।

''तें कहौं की शान्ति होतै राम,
शान्ति लें तें नीतियो निष्काम !

''जै ठियां नारी के नै सम्मान
वै ठियां केना बसै भगवान !

''नारी के जे हेय समझै
नीति ऊ की शुद्‌ध ?
जे बूझै नर-नारी सम छै
राम, ऊ नर बुद्‌ध !

''नारी के आँसू गिरें तें
सम्मुखे कलिकाल,
कोय लगौ कत्ते नी ऊच्चों
झुकले लगतै भाल ।

''कल्प-युग कोय्यो रहौ नी
नारी जों भयभीत,
तें वहाँ केना लिखैतै
देवता रों गीत ।

''देह शबरी के रहें नै
प्रश्न रहतै शेष,
खुल्ले रहतै तब तलक ही
ई व्यथा के केश ।''